

ASHA ARCHIVES 3328

18/8

१६७

यत्तुः पश्चि रचयम्भु । शिवलिङ्गः स्तोत्र
मो शिवविधि निपुर कोली केवच
साहे भूः स्तोत्र

[illegible]

विनि या ग ४॥ ॥ स्त्रीं दी की ने को १ उं दी श्री भू गु स्या नमः ते ज
स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं गर्जनी स्या नमः ४॥ हो १ तं स्त्रीं दी जी म ध मा स्या नम
४॥ स्त्रीं दी स्त्रीं स्त्रीं वे हो १ उं दी स्त्रीं भू नामिका स्या नमः ४॥ तं उं दी स्त्रीं
गी क नि स्या स्या नमः ४॥ को १ तं स्त्रीं दी जी के न ग ल पृ थ्वा स्या नमः ४॥ ॥
वृन्ति कर्न न्यास ४॥ ॥ वरुं कर्म ना झ न्यास ४॥ आसन ॥ तं उं आधा

नादिः॥ त्रिंशत्तयं च यथा सना यथा पृथक्॥ अथ ध्यानं॥ बालाकमर्चुला
हस्तांचतुर्बाहुर्द्विजिह्वा च नाशिया॥ द्वाभ्यां ललाटाय ध्यायन् यत्कीरुजा
म्यहं॥ ध्यानपूर्व्यं नमः॥ अवाहन स्थापनादि॥ पादार्घ्यं च मनी
मनादि॥ ॥ ग्याऊं श्रीगं॥ विन्दुवियं॥ तं कीं सीं श्रीं॥ उं चं
तं उं श्रीं॥ वक्ष्ये कं उद्यानपीठं चर्यानाथं लिखितं म॥

नंध्यत्रीपरीवक्त्रात्सख्वाकीर्त्तयायुक्ता॥ ३॥ वलि॥ थानिमूर्जद
र्लथेन॥ धाठनीविद्या॥ श्रींजींकींनंसीं॥ ४॥ श्रींकींकांकांलींजीं
४॥ श्रींकींजीं॥ १३॥ ३॥ वली॥ उर्ध्ववक्त्रात्सख्वागदिविरुवि
गगलेरुगलनिसुलवायागालवानलवासलिलयवनथार्थ
उक्तस्तिनावाशकृष्णयी॥ अययीअदिशिनुक्तनयदायूष्यधूपा

ग्रहरुद्रवली पूजा सान्निविधि समाप्त ॥ विषयी पूर्ण नन्दन

नस्तुतामयाग्रहा॥ नाऊ नाऊ ह्यत्री देवी कवचं सखितमयीक्ष

ध्यातुमिच्छामी त्वत्त्वगन्तुकथयस्व मयी यत्ने ॥ ॥ ॐ ॥ यत्र उवाच ॥
 लल्लुवा लस रुसा षी वानि नासि पून पून ॥ सिस्र रा वान्म रुा दवी
 ऐक सित्वं मयी प्रिया ॥ अस्य नं गुं फं कवर्त्त सर्व काम वत्र यद ॥ पी
 नय स्व वद वं षी कथयामि ॥ नू धाग नू ॥ अस्य धी धा उ षी विद्या कव
 वस्य र्च विस्म ग ॥ महाद वं वय स्मा न य किं च न्द उ दा रु ग न्ना ऊ ना ऊ

ॐ श्री देवी देवगायत्रि कृत्तिगा ॥ सर्वार्थसाधन देवी विनिर्वाण यक
 र्तिगा ॥ पूर्वमां हे नवी यातु वानामां यातु । दक्षिण ॥ मालिनी यक्षि म
 यातु शशिनी तु नवतु ॥ उर्ध्वयातु महादेवी महाम्रिय न काली ॥ अ
 धस्तात्यातु देवङ्गी पाताल तल वासिनी ॥ अधः नवार्गव ॥ यातु का
 मनाऊरु तथा हृदि ॥ नाम न यातु मानि ह्यं मरु कं सर्वकामद ॥ वदन्

लन्धसवगां कृच्छिदस्मान्नचसर्वदा ॥ महाविद्या रुगवती पातु मां
पत्रमं धवत्री ॥ **वैष्णवी** ॥ ललातमा पातु या या नू **की** **की** **वू** सध्वनं नु या
॥ नासायां कलूया ॥ **ध्वे** **व** **द** **दि** **दी** **चि** **वू** **कं** **ग** **था** ॥ **सी** ॥ पातु **ग** **ल** **द**
दयममसुदी ॥ नाहिदसकं नू ॥ कल **की** **की** **सी** **गु** **द** **द** ॥ **स** **दी**
पातु या दया ॥ **स** **दी** **मा** **पा** **तु** **स** **व** **ग** **स** **की** **पा** **तु** **म** **स** **न्धि** **षू** ॥ **ज** **ल** **क** **ल**

गथा का ॥ **दि** **कू** **ना** **ज** **ग** **द** **ग** **था** ॥ **दू** **ख** **मा** **त्रि** **ना** **पा** **तु** **स** **दी** **स** **दी**
मनां रुवा ॥ **दू** **स** **ध्व** **पा** **या** **म** **हा** **द** **वी** **प** **त्र** **नि** **स्त्र** **द** **व** **गा** ॥ **वि** **ज** **या** **म**
ज **ला** **दू** **गि** **क** **ल्या** **नी** **रु** **ग** **मा** **त्री** **नी** ॥ **ज्ञ** **ना** **च** **मा** **त्रि** **नी** **वि** **द्या** **स** **व** **दा** **या**
तु **मा** **णि** **वा** ॥ **ॐ** **त्य** **व** **क** **व** **चं** **द** **वी** **द** **वा** **ना** **म** **पि** **दू** **र्ल** **ह** ॥ **न** **व** **पी** **त्या**
म **या** **ख्या** **न** ॥ **ग** **म** **प** **नी** **र्य** **य** **य** **त्न** **न** ॥ **ॐ** **द** **त्र** **ह** **स्य** **प** **न** **म** **गु** **द्वा** **द्वा** **द्वा**

नत्रपिय ॥ धनंजयसममायुष्यं हागभाकृपदं सुरं ॥ दसपुना
सनं पूसा नत्रनात्री दसं करं ॥ आकर्ष्य न कनन्दवी स्रं भ्राचार
कनीतिव ॥ ॐ दं कवचमहात्वा त्राजत्राजं ध्वनी सिवां ॥ याचयन्
यागिनी वन्दे सहस्रानां ससय ॥ नगस्य मत्तु सिद्धिं स्यात्कदा
कीं भुं सो दं हो कनी दं क्री हं यिनं सी दं विं कृ हि न डि

चिदपि सावित्री ॥ ॐ रुला कच दानिदं त्रागदखरुयानिच ॥ यन
नत्रकंगला यसूया नी मवा प्रामि ॥ गस्मा दगस दास्या सा दधिक
त्री रुवं नन ॥ मच्च कुनिग नमिदं कवचं सय (ॐ मरुं ॥ यजा वि
(धच यत्र नो यजा विधि नाप ० यन् ॥ श्री रा (ग हा ग ललिता शुभा
निसूरा निरुक्ता ॥ मत्तु दद्या ॥ पदं रुजगि नत्यून नत्रक कालं च ॥ ॥

ॐ निष्ठीकूलान्तसंहिनायां विष्णुनकालीरुक्वचसमायुक्तं ॥ १ ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ महिम्नः यात्रकं यत्र मन्त्रिदूषाय सद्गुणी मुनिवृक्का
दीनामपि तदवसन्नात्त्वयि गिरः ॥ अथावा ॥ सर्वस्वमभियन्तामा
वधिगृह्णन् ममायौ बलाशुद्धननिनयवाहयविक्रयः ॥ १ ॥ अनीतः
यन्काननं वचसि सावाह्वनसुता नगद्यावृत्त्यायं च किमसि धरु
धुतिरयि ॥ सकस्य स्तानव्यः कनिविधुगुणः कस्य विषयः यदत्व

^{न१} बौद्धीन पतति न मनः ४ कस्य वचः ॥ १ ॥ ^{ध१} मसूरी तावाच ४ यत्र मम म
 तं निर्मि तव त स्तु वव न्कि म्मा गपि स्रव गु ना वि स्म य यदी
 मम त्व तां वाणीं गु ण कथन यू ष्य न रु वत ४ यू ना मी स्य र्थ स्मि
 न्मूत्र मथ न बुद्धि र्थ व सि ॥ ३ ॥ तवै ष्व र्थ य रु ऊ ग दू द य न का यु
 लय कृ त् ए यी व मु द्ध र्थ ति स्र षू गु ण रि न्ना स्र त नू व ॥ अ रु द्या ना
 ता २

मस्मि न वन दन मणी या म न म नी वि रु रुं व्या का णी वि द भ त
 ०० रुं क ज उ धि य ४ ॥ ४ ॥ कि मी रु ४ किं का य ४ स ख ल कि म्पा
 य म्पि रु व न कि मा क्ष तां वा क्ष ता स्र ज ति कि म्पा दान वृं ति
 व ॥ अ रु द्ध र्थ य न व स न दू र रु त धि य ४ कृ त कौ र्य कां धि
 म्ख न य ति मा रु य ज ग तां ॥ ५ ॥ अ रु मा ना ला का ४ कि म व

यं मन्त्राणि जगता मधि स्थाता वं किं रुव विधिव नाद रुवति ।
अनी ल्हा वा कृथा इ वन जनन क ४ यत्रिक नायता मन्दा स्त्री पुत्र
मन्त्र वं संहारत ०० म ॥ ६ ॥ जयी सांख्यं याग ४ यत्तु यति मर्त वेषू
वमिति यरि च पुस्तक नयन मिद म द ४ यथ मिति वा नूची ना वि
विश्रा द श कटिल नाना यथ श र्षा नृ च मका ग म्म स्व म सिय य

साम श्रु व ०० व ॥ १ ॥ मदा क ४ ख द्वा गं यत्र शुत्र जि न र स्म रु नि
न ४ क या लं च ती यरु ववन द त ला य क व र्ण । सुत्रा स्ता ना म द्वि
दधति शु र व द्रु यु नि रि तां न रि सा ला ना म विषय मृ ग नृ षा
य म य ति ॥ ७ ॥ धूर्व क धि त्त र्व स क ल म य न स्व धू व मि दं य
ना ल्भो व्या ल्भो व्या ज गति ग द ति व्यस्त विषय । समस्त थत

सिद्धि विज्ञानि निज मा सिद्धि जाति

स्मिन्पुनर्मथनते विस्मितः वसुवर्जिङ्गमित्वानिखलूनन ४
समुखनता ॥ १० ॥ तवेष्ट्य यत्तायदय निविनिष्क्रि देवि नवध
पविष्कुरु यातावनलमनिलसंधवयषशतता रुकि घट्टारु
वगुवगुगह्यागिनिगयस्त्रयं तस्मता स्यात्तव किमनव किर्त्त
रुलति ॥ १० ॥ अयत्तादासा यशिवनमवेन वगि कर्त्त दण

स्यायदा दूनरुतनगकसु यनवग्नान निवः यद्वल्लनीव वि
तयवग्नान्मानुरुवलः ४ स्मिन्नायास्त्र हर्कस्मि पून रुव वि सु
र्जितमिदं ॥ ११ ॥ अमृष्य तत्सर्वाः समधिगतसारं गुजवर्त्तव
ला कलासयित्व दधिवसता विक्रमयत ४ अलया याताल
पलसवलितार्गु यद्विनि सि यतिहावयासीदुवमयविता

मूक्यतिखलं १२॥ यद्विदुः सृजन् भाववदयनमाञ्चनयिसती
मधुघृकवाद्यः यमिजनविधयतिशुवनः नतद्विण्णतस्मि
नवनिवसितवित्त्वचनगयाः नैकस्यायूत्रयेरुवतिगिन
सस्ययवनति १३॥ अकाण्डवक्त्राण्डकयवकितदवास्
नकृयाः विधयस्यासीद्यमिनयनविषं स्रद्धतवतः १४॥ सुक

त्मा १५॥ तवनकूत्रनप्रियमहाः विकारायिष्मद्याशुव
नरुयरंगव्यसनिनः १६॥ असिद्धाथनिवक्तविदयिसद
वास्तननननिवर्तकनिर्यङ्गगतिजयिनायस्यविनिखाः १७॥
यन्धनीगत्वामिगवस्तनसाधवनमरुत्मानः १८॥ स्मरुवात्मान
दिवगिष्यथः १९॥ यनिरुवः २०॥ महीयायाद्यातादुजतिः

नाम

नाम

रसमय ४५ कृष्ण कृष्ण वृष्णी सामनाल
धक कृष्ण मरि मयाय धनका विजयलः श्रीजी
धनगनेसिखित ॥ १५ ॥ ॥ ॥

म

ASHA ARCHIVES 3328

सहस्रसंख्य यदं यदं विष्णुर्मादुजयनिद्यदमग्रहगर्भास
कथयिस्त्रिंशत्यनिरुतजडातातिवतडाजगदकार्यत्वनद
सिननुवामेवविडगा॥१७॥विद्ययायीतावागलमुचितकुरु
क्रमनविषयवालावावायि४५५तलद्यदृष्ट४निवसितजगद्वा
याकार्जलविधिलयंतनकृतमित्यनेनैवान्नयं५तमहिमदि
व्यंतववयू४॥१८॥नथ४क्षणीयनागतवृत्तिनलग्नावनुवत्थ
नथा४नवडा४कानथवनलयाणि४गनवृत्तिदिधक्षासुकार्य

शिवनृजमाजववविधिर्विषय४कीज्ज्ञानखलूपनतनु४
यजुविद्यु४॥१९॥रुविस्मसारुमुकमूलवलिमाधाययदथाश्रय
का॥नतासिनिजमदरुननेएकमुलंगतारुकुदक४यानिनु
तिमसौचकुवपूषा॥२०॥नकायशिवनृजगतिजगता
॥२१॥कतीसुफजायत्वमशिरुलयागकुमुमता॥ककमपि
धसुलतिपूषावाधनमृता॥अतस्मात्संयज्जकुमुपूरुल

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥ मनः १५ यत्क विरु सविधम
वक्ष्यामि मन्त्रं तं १५ यद्वा दामा १५ यमदसालिलो संगितदृष्टा १५
यदा लाक्षा दं दं दं वनिम आ मृ तम १५ दधत्यनसु लं किम
पियमिनसु किल रुवान ॥ १५ ॥ त्वमकं स्वसामसु मसियव
स्व दूतवरु स्वमायस्व योमस्व मध्वनविना त्मास्व मित्रिवापा
निष्ठिना मर्वस्व यिपनिता विग्रु गिर्वन विद्र सु रुर्ववय

मिरुहियत्वन रुवसि ॥ १५ ॥ गयी तिस्र वृ ली मि रुवनमथाजी
नपिस्रवानकावाय वृत्ति मि रिवरि दमली वृत्ति विरुति ॥ १५ ॥ वीयन
धामधनिरिव वृत्ति नमगृहि १५ समसु अस्व त्वा १५ वनदगृत्वा
त्या मिति यद ॥ १५ ॥ रुव १५ वृत्ति वृत्ति यति वृत्ति १५ स रु मद्रु सुथा
ली मद्रु नाविति यद रि धाना सुक मि द ॥ १५ ॥ मृत्तियुत्त कं य विवव
तिदव वृत्ति वयि प्रियाया स्म धम्य प विरु तनम्या स्म रुवत ॥ १५ ॥

च ह निव तव च न ज्ञा न वि द या र्थ किं । या च ह या च हं । पु न न पि ता भ व ता भ व
 ॥ ३७ ॥ श्री यू ष्य द नु स ख र्थ क ज नि ४ मृ त नः । मा ण व कि त्वि म रु न व रु न पि य
 वा । क व सि त न य ति त न गृ ह सि त नः । मं यी नि ता रु व ति द य ति म्म ह ४ ॥ ३८ ॥
 क स म द ह न ना मा स र्व ग भ र्व वा ज ४ गि षु ण ४ ध न मो ल द्दे व द व स्य दा स ४ स
 पु त्र नि ज म दि म्मा ण श्च न्वा स्य ना ष्वा त् । म व न मि द म का र्षी दि ष्य दि र्थ म दि
 म ४ ॥ ३९ ॥ स न व न म रि पू ऋ स न्ने मा त्ने क रु गु ष ० ति य दि म न ष्य ४

याजतिन्नान्यत्र ताः। वृजतिनिवसमोयं किन्ननेः॥ सुयमानः॥ सुवनमि
 दममायं दिद्यदिद्यं महिम्नः॥ ३२॥ ॥ इति यथा दक्षयणी तं म
 हिम्नः॥ सायं स मायं ॥ ॥ शुभं ॥ ॥ उं यथु यतयनमः॥ लोकं शुभं वा
 ननेः॥ सृजति यः सर्वं जगद्वद्वान् याविष्यं कुरुतस्मिन्ति मधुनियुक्तं
 कवात्मा रुनिः। संक्षयजगतां रुवा रैवति यः सायं गिम्नं विन्दुः॥ यवाय
 यनमात्मकः॥ यथु पतिः॥ याया घटः॥ यायु मां ॥ आदाय गुयति नत्वा आति

सिद्धं मरुद्वर्गं नया लवा मती तीव्रं गुह्यं व्यासं रुद्रं ॥ सर्वं श्रीं मूलं लि
 ग्मनां च गुह्यं षष्ठीं स्वयं गुर्वी। केवल्यं रुद्रं दागुं श्रीं कथां मि कु मर ४ सर्व ॥
 नमः ४ कृ। ग। ध्व नाया श्री। श्री म ध्व नां तनमः ४ नमः ४ को दी ध्व ना श्री। क ध्व य ना य तं
 नमः ४ नमः ४ धी सु ठि के ना य। च। गु ह्य य तनमः ४ नमः ४ धन ध्व नाया श्री वि क ठ ना य तं
 नमः ४ नमः ४ दु ध्व नाया श्री। गाले ध्व ना य तनमः ४ गु फ ना य नमः ४ सु र्यं तिले ४ म
 यनमानमः ४ नमः ४ ध्व नाया श्री। नाम ध्व ना य नमः ४ नमः ४ काले ध्व नाया श्री न टान

कृणतनमः ४ नमः ४ दान क ना य। ग। या ल ना य तं नमः ४ नमः ४ ध्व नाया श्री
 उ नमः ४ नमः ४ धी न चि के ना य। ग। ख न ना नमः ४ नमः ४ सु य गु क ना
 य कृ ठ ध्व ना य तनमः ४ नमः ४ इ सि र ध्व नाया श्री। रु व व ना य तनमः ४ वृ ध ना य
 नमः ४ सु र्यं रु द्ध ध्व ना य तनमः ४ १० ॥ मृ ग नु गि ख ना सी न। गत वृ ड् ना तनमः ४
 नमः ४ का के ध्व नाया श्री। म नि वृ ठ ना तनमः ४ नमः ४ या ग ध्व नाया श्री। ना ना य त
 ना तनमः ४ ति ति ति ति ध्व नाया श्री। नि र्यं रु द्ध ना नमानमः ४ व ल वृ ठ ध्व ना

रिपुपुन

या स्मै. वार्यवार्यनमानमशानमावागीधवायास्मै कीलधवायतनमशानमासु
 वाल्मिकेय. मङ्गलधवायतनमशानमासु विमलधवाय. नमाइनकेधवायत
 विष्णुयनायास्मै. सततीतनमानमशानमासु सामङ्गाय. (गारुवाठहातनम
 नमारु. दुधवायास्मै. शिलि. (दुधधवायतनमशानमस्कृयितगधवाय. सर्वधवाय
 तनमशा. (गालाकमवलिकेय. सततीतनमानमशापीचदनरुवाठहा. दुध
 नित्यनमानमशानमायकधवायास्मै. चण्डिकधवायतनमशानमाधर्मधवायास्मै

(ग कर्तुधवायतनमशानमशकाठीधवायास्मै. वालधवायनमानमशानमासु न
 धवायास्मै. यवतधवायतनमशानमाङ्गलधवायास्मै. गुधधवायतनमशाकिना
 ठगनमासु. रसधवायनमानमशा. २० ॥ नमस्कृदुवनधवाय. वृद्धागमन
 तनमशा. तिस्रस्ययमृत्युयः. गमुयः सर्वदाममशा. यद्युयतधवाय वृद्धा
 धा. यदुधपरीस्ययशुवाम। सससुनसि ता नाचुकि मू कि युदयिना।
 मरुमङ्गलदयानायायनीनकाविर्ण। नृतायां विवलिज्ञान. मिदंस्तु

२४
 २५
 २६
 २७
 २८
 २९
 ३०
 ३१
 ३२
 ३३
 ३४
 ३५
 ३६
 ३७
 ३८
 ३९
 ४०
 ४१
 ४२
 ४३
 ४४
 ४५
 ४६
 ४७
 ४८
 ४९
 ५०

जगद्धिती ॥ मानवायय ० अथा. र किंचिदुसमचिता ॥ रु लुं वीचि न दय
व. मा र्क दद रु ग कृ ना ॥ २५ ॥ ॥ नू ति छी ग य य ति ग म ग म कृ री ग्री मृ
लय छु य र ग्य रु ४ ष ष्ठी स य मृ नि व लि ज्ञा ना स्म र्ग समा र्क ॥ ॥

श्री गणेशाय नमः श्री नमः स गिरि ०० ह्य २५ न्य

। स्व

ॐ प्रजापतये नमः ॥ ॐ भोजनविधिः ॥ लंखनहायः ॥ योकिहगुवायः ॥ देवछायः ॥
 ॐ प्रथिविनमः देवाय नमः नागाय नमः सर्वाय नमः ऋषये नमः शतकाय
 नमः गंधर्वाय नमः सैलाय नमः वनस्थिते नमः वेदाय नमः कुर्मभ्य नमः
 भूतकभ्य नमः देवदेवेभ्य नमः धन्यं जयेभ्य नमः लक्ष्मिस्त्री नमः ॥ काकाय न
 नमः ॥ धनापि नमः ॥ ॥ स्थानाय नमः ॥ सकलाय ॥ जलविश्व ॥ पूर्वतेनाम ॥
 ॐ नृलोवत्या धरं देवं लक्ष्मिस्त्री वरुह्यिनी ॥ धृष्टानमंति देवे सजलं देवो नमः ॥
 म्यहं ॥ शिवाय नमः ॥ ॐ विश्वे सर्वविध हरेभ्य नमः ॥ नमः ॥ प्रजापतिदेवते ॥ नमः ॥

लंखउयकात्वे॥ ॥ॐ ननु विलुना श्रैवपा नेयस्य चरंति का सतजिववचदोमा
 तत्सर्वेदां तु महसि॥ इदं भक्तं मन्त्रं सोपकरी विलुदेवतेति निरलु॥ ॐ अम
 नो जलपिधानमसित्वाहा॥ ॥ पंचप्रातः॥ ॐ अनामिका न॥ ॐ प्रा ना
 सत्वाहा॥ ॥ कनिष्ठ॥ ॐ आनायत्वाहा॥ मध्यप्रा॥ ॐ अथानायत्वाहा॥ तर्जनी
 ॐ उदा नायत्वाहा॥ मंचांगुले न॥ ॐ समा नायत्वाहा॥ ॥ जलनोते॥ ॐ ति
 थदेवगता सर्वे अक्षोत्पत्तिं च सर्वदा ॐ अमनो जलपिधानमसित्वाहा॥

तसिनालितय॥ ॥ जलो ज्ञापललोकाद्यो जलशो अत्र वाहनि॥ तिष्ठदेवो ग
 ना सर्वे अथ तत्पत्तिं च सर्वदा॥ इति भोजनविधिः॥

व
 व
 मं
 स
 ना
 का
 दे
 कु
 ह
 स्वा

पुष्पदत्तप्रणीतः॥३५॥ शिवे भक्तिः शिवे भक्तिः शिवे भक्तिर्भवे
भवेः सदा भूया सदा भूया सदा भूया सदा ममः॥ हरं हरे
ति हरेति हरेति वाः शिव शिवेति शिवेति शिवेति वाः भव
भवेति भवेति भवेति वाः न ज मनः शिव सेव निरंतरं॥१॥
इति श्री पुष्पदत्त प्रणीतं श्री सहस्रश्री महादेव स्तोत्रं॥

6.